ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

सम्पादक : डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

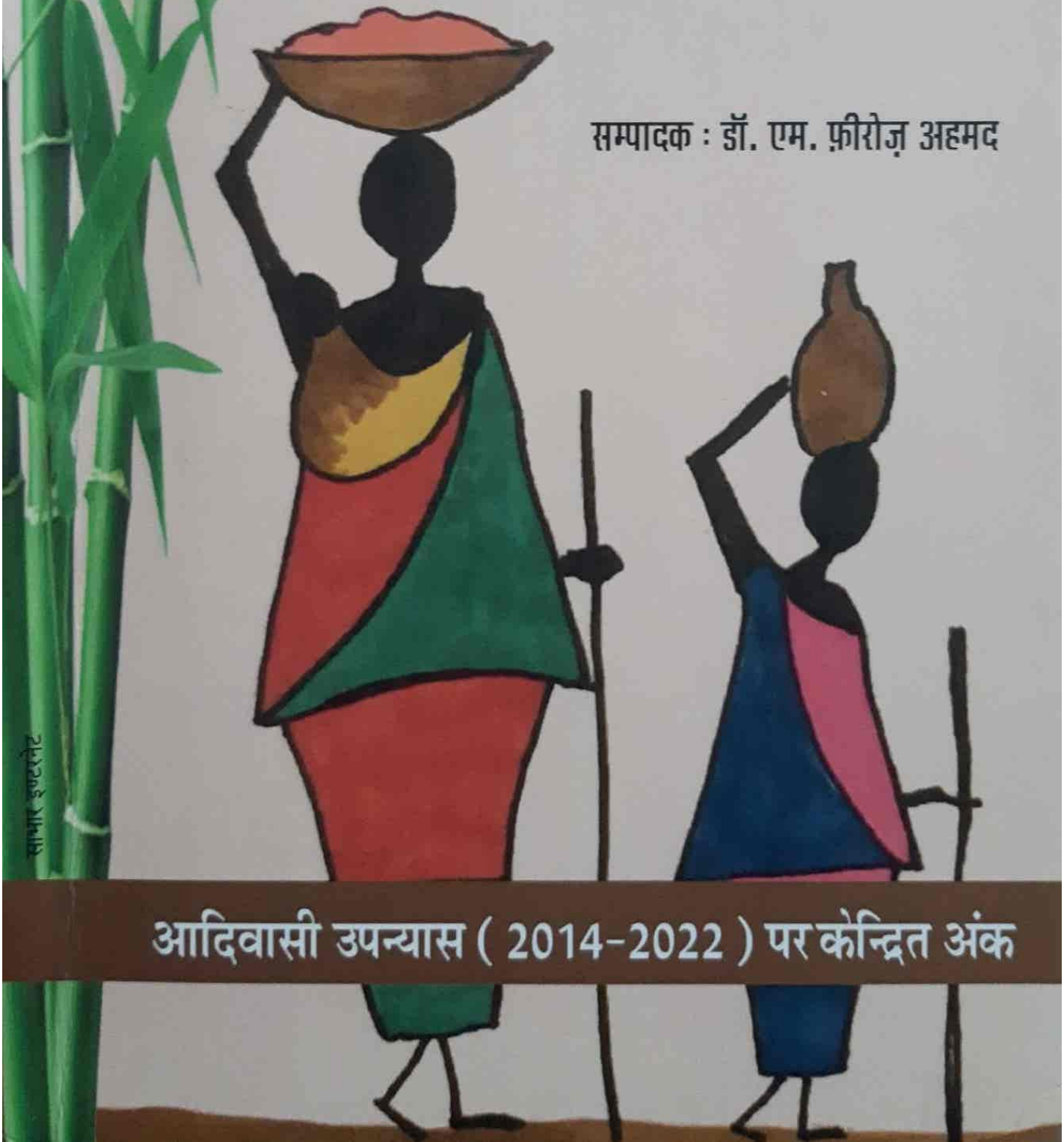

साभार इण्टरनेट

आदिवासी उपन्यास (2014-2022) पर केन्द्रित अंक

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 18 संयुक्तांक, अप्रैल–सितम्बर 2022

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

सलाहकार सम्पादक
प्रो. मेराज अहमद
(ए.एम.यू. अलीगढ़)

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ(बी.एच.यू.)
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़)
डॉ. इकरार अहमद (दिबियापुर)

सम्पादकीय सम्पर्क
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी,
नियर पान वाली कोठी,
दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोबाइल : 7007606806
E-mail : vangmaya@gmail.com

इस अंक का मूल्य–175/–

सहयोग राशि :
द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 800 रुपए

अनुक्रम

खण्ड-1 (आदिवासी : कथा आलोचना)

सम्पादकीय

1. झारखण्ड के सामाजिक यथार्थ का जीवंत दस्तावेज : रेड ज़ोन/7
   प्रो. श्रद्धा सिंह
2. छत्तीस का खेल और बस्तर के आदिवासी/16
   डॉ. शिवचन्द प्रसाद
3. संपन्न कबीले का सपना साकार करने वाला आबोतानी : जंगली फूल/25
   डॉ. जसविन्दर कौर बिन्द्रा
4. महाअरण्य में नर-गिद्धों के विरुद्ध उलगुलान/32
   डॉ. रमेश कुमार
5. प्रतिरोधी संस्कृति की अनवरत संघर्ष गाथा : ऑपरेशन महिषासुर/44
   डॉ. जिन्दर सिंह मुण्डा
6. आदिवासी जीवन संघर्ष और विद्रोह का यथार्थ दस्तावेज : बस्तर 1857/51
   डॉ. प्रीति सिंह
7. महासमर की साँझ उपन्यास में आदिवासी जीवन/63
   सुशील कुमार
8. आदिवासी और वंचित वर्ग की गरीबी-भुखमरी...आखिरी पीढ़ी/72
   डॉ. सियाराम
9. रक्तरंजित शासकीय अराजक रेख : लाल लकीर/82
   डॉ. विमलेश शर्मा
10. रोशनी की बाट जोहता आदिवासी समाज : मिनाम/88
    सुधा जुगरान
11. आर्य-अनार्य, राक्षस संस्कृति का एक विराट रूपक-आर्यगाथा/99
    डॉ. प्रज्ञा गुप्ता
12. आदिवासियों के अंतहीन पीड़ा की संघर्ष गाथा : अस्थि फूल/106
    डॉ. किरण तिवारी
13. ...जब जबलपुर का न्यायालय भील लड़ाकों से घिर गया था!/113
    जनार्दन
14. आदिवासी जीवन का पक्ष-विपक्ष/119
    डॉ. श्रीकांत द्विवेदी
15. मैं तुम्हारी कोशी : आदिवासी स्त्री का दर्दनाक दस्तावेज़/127
    डॉ. भगवान गव्हाडे

आदिवासी जीवन संघर्ष और विद्रोह का यथार्थ दस्तावेज़ : बस्तर 1857

डॉ. प्रीति सिंह

बस्तर 1857 उपन्यास का केंद्र आदिवासी जीवन संघर्ष एवं आदिवासियों द्वारा किया गया विद्रोह रहा है। किंतु राजीव रंजन प्रसाद द्वारा वर्ष 2015 में लिखा गया यह उपन्यास अनेक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। बस्तर के इतिहास, संस्कृति एवं परंपराओं का कथानक बुनते हुए वहाँ उत्पन्न राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से जोड़ते हुए राजीव रंजन प्रसाद ने अभूतपूर्व उपन्यास की रचना की है। जो ऐतिहासिक तथ्यों को अपने कथानक में उद्घाटित करता है। यह उपन्यास आदिवासियों की मूल संस्कृति, जीवन दर्शन, उनका प्राकृतिक प्रेम, उनकी धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक परंपराओं को भी अभिव्यक्ति देता है। उपन्यास में अंग्रेजों के विरुद्ध आदिवासियों द्वारा किए गए विद्रोह का वर्णन अत्यंत विस्तार एवं गंभीरता से किया गया है, साथ ही इस उपन्यास के माध्यम से बस्तर की सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को बहुत नज़दीक से देखने का अवसर भी प्राप्त होता है। आदिवासियों द्वारा अंग्रेज़ों के खिलाफ किए गए विद्रोह अथवा आंदोलन को इतिहासकारों ने एवं विद्वानों ने स्थान नहीं दिया, जिसके वह वास्तव में अधिकारी थे। बस्तर 1857 उपन्यास में इन्हीं बिंदुओं पर लेखक ने गंभीरता से चर्चा की है।

"वर्ष 1857, भारतीय इतिहास में मील का पत्थर है। अनायास नहीं था कि ईस्ट इंडिया कंपनी के बढ़ते दायरों और ज्यादतियों के विरुद्ध विद्रोह आरंभ हुए। सिपाही विद्रोह अथवा गदर कह कर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को कमतर आकने की वृत्ति रही है। ...वस्तुतः यही वह समय है जब कहीं गोंड, कहीं भील, तो कहीं संताल आदिवासी संगठित रूप में अपना विरोध व्यक्त कर रहे थे।"[1]

देखा जाए तो जब हम इतिहास की पुस्तकों को देखते हैं, तो आदिवासी संघर्षों का वर्णन वहाँ नगण्य है। उपन्यास में बस्तर केंद्र में है, उसके साथ दंतेवाड़ा, जगदलपुर,